

पुलिस ने जन चौपाल लगाकर निडर होकर मतदान करने की अपील

(आधुनिक समाचार सेवा)

अनिल कुमार अग्रहरि

डाला सोनभद्र। आगामी विधानसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान करने के लिए पुलिस ने जन चौपाल लगाकर होकर मतदान करने की अपील की है। पुलिस ने मतदान केंद्र प्रथमिक विद्यालय बाड़ी में स्वतंत्र नियम्भ एवं निडर होकर मतदान करने के लिए प्रेरित किया गया। आज रविवार के बाद निरीक्षक चौपाल के बाद विद्यालय बाड़ी में अपरिधिक विद्यालय स्थित मतदान केंद्र पर जन चौपाल लगाकर

मतदानओं को स्वतंत्र करने के लिए कहा भयमुक्त होकर किसी दबाव या प्रोलेभन में आ निपट मतदान करें। मतदान के दिन अधिक से अधिक संख्या में घरों से निलंबकर अनेक मत के प्रयोग करें। अगर कोई व्यक्ति किसी को दाने द्वारा बात करता है तो तुमने पुलिस को सूचना दो। सूचना देने वाले का आपकी बातों को गुप्त रखा। जाएगा अपरिधिक विद्यालय के लिए प्रेरित किया गया। आज रविवार के बाद निरीक्षक चौपाल के बाद विद्यालय बाड़ी में अपरिधिक विद्यालय बाड़ी में अपरिधिक विद्यालय स्थित मतदान केंद्र पर जन चौपाल लगाकर

जाम में फंसे मंत्री और मरीज

ओरा (सोनभद्र)। शनिवार को अपराह्न चौपाल भरहरी मार्फा पर तीन घंटे तक जाम लगा रहा। जाम में एंबुलेंस सहित समाज कल्याण

जिसमें गाजीपुर के एक ट्रक के चालक की पिटई के साथ उसका मुख्य शीशा भी फूट गया। उत्तर मंत्री संजीव कुमार गाँड़ चौरा विजौरा



और बड़गांव से जनसर्कर कर वापस चौपाल की तरफ जा रहे थे। सिद्धुरिया पुल से पहले 20 से 25 मिनट तक जाम में फूटे रहे। फिर लिलिकारी को फून कर सूचना दिया। एंबुलेंस भी जाम में एक घंटे फूटे रहे। महलपुर के साथ सिद्धुरिया पुल पर जाम के दौरान राहगीरों और बालू लड़े ट्रक चालकों के बीच कहासुनी के साथ हाथापाई भी हुई।

सराफा व्यवसायी से एक करोड़ रुपये रंगदारी मांगने वाले दो गिरफ्तार

सोनभद्र। घोरावल के सराफा व्यवसायी से एक करोड़ रुपये रंगदारी मांगने वाले दो आरोपितों को शुक्रवार को पुलिस ने सुन्तानपुर से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस

घोरावल कोतवाली पुलिस को दी। पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू की। मामले का राजकाश करने के लिए एसपी अमरेंद्र प्रसाद



ने मोबाइल लोकेशन के आधार पर दोनों को पकड़ा। शनिवार को राबूट्सार कोतवाली में अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय विनोद कुमार ने मामले का राजकाश किया। एसपी ने बताया कि घोरावल कोतवाली के नार निवासी प्रयावरी के पनलाल गुप्ता से बीते हुए फरवरी को अज्ञात लोगों ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी मांगी। व्यवसायी पनलाल ने सात फरवरी को मामले की जांच करना की चाही दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया गया है।

छात्रों की आवाज से आज गूंजेंगे विद्या के मंदिर

सोनभद्र। कोतवाली पुलिस को दी। पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू की। मामले का राजकाश करने के लिए एसपी अमरेंद्र प्रसाद

किए। जिन्हें पकड़ दिया गया। गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को देखकर भागने का आवश्यक जाम के दौरान खुलाकर एंबुलेंस को बाद कार्य को शुरू करने के लिए आदेश दिया।

सिंह ने एसपी को दिया गया।

गिरफ्तार आरोपित अंकित मिश्र

पुत्र राधेश्याम मिश्र उर्फ श्याम व आयु अर्पण सागर एवं उर्फ गुरु राधेश्याम मिश्र ग्राम रामनगर थाना चांदा जनपद रामनगर के अपराह्न दर्जनों के बाद वापस चौपाल को लौटा दिया। एसपी ने फून पर एक करोड़ रुपये रंगदारी को द

सम्पादकीय

उत्पादक, उपभोक्ता और
अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचाती रेलवे
की किफायती माल ढुलाई क्रांति

हालिया आम बजट में तमाम खास घोषणाएं हुई, जिनका व्यापक विश्लेषण भी हुआ है। फिर भी कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर उतनी चर्चा नहीं हुई, जितनी होनी चाहिए थी। जैसे मोदी सरकार ने अगले तीन वर्षों के दौरान देश में सौ गति-शक्ति कारों टर्मिनल विकास करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। इसके माध्यम से एक स्टेशन-एक उत्पाद की संकलन्यां को सिरे चढ़ाने की सरकारी योजना यदि आदर्श रूप में फलीभूत हुई तो यह बाजी पलटने वाली साबित हो सकती है। मोदी सरकार ने रेल डुलाई क्षमताओं से जुड़ी संभावनाओं को बख्खी भुनाकर न केवल भारतीय रेलवे को मुनाफे की पटरी पर आगे बढ़ाया है, बल्कि इससे आपूर्ति की दुश्वारियां दूर होकर समग्र अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिला है। सरकार अब इस मुहिम को और रफतार देना चाहती है। यह किसी से छिपा नहीं कि कृषि उपज को देसी-विदेशी बाजारों तक पहुंचाने में व्यवस्थित नेटवर्क का अभाव भारतीय खेती की बढ़ावाली की बड़ी वजह है। रही-सही कसर सड़क मार्ग की महंगी डुलाई ने पूरी कर दी। वृद्धि की राह में इसी अवरोध को भांपते हुए सरकार ने कृषि उपजों की बिक्री के व्यवस्थित नेटवर्क बनाने के साथ-साथ डुलाई लागत कम करने की दिशा में कदम बढ़ा। इससे पहला काम है रेलवे से माल डुलाई को बढ़ावा देना। भारत में लाजिस्टिक लागत सकल घेरेलू उत्पाद के 13 से 15 प्रतिशत के दायरे में है, जबकि इसका वैशिक औसत आठ प्रतिशत है। एक किमी लंबाई की मालगाड़ी औसतन 72 टक्कों जितना माल ढोती है। इससे न केवल डुलाई लागत कम होगी, बल्कि व्यस्त राजमार्गों पर ट्रकों की भीड़ कम होने से माल समय से पहुंचेगा। सड़कें भी सुरक्षित बनेंगी। दुनिया भर में रेलवे से माल डुलाई सड़क मार्ग की तुलना में सस्ती, पर्यावरण अनुकूल और शीघ्र डिलीवरी वाली होती है। वर्ही भारत में रेल डुलाई न केवल धीमी, बल्कि अनिश्चित भी है। यहीं कारण है कि आजादी के बाद से ही माल डुलाई में रेलवे की हिस्सेदारी घटती जा रही है। अधिकांश माल डुलाई सड़क मार्ग से होने से उसकी लागत बढ़ती है, जिसका बोझ अंतःउपभोक्ताओं पर पड़ता है। उत्पाद के दाम बढ़ने के चलते बिक्री प्रभावित होने से व्यापारियों को भी घाटा उठाना पड़ता है। बतौर उदाहरण सेब का उत्पादन देश के उत्तरी राज्यों में होता है, लेकिन पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों तक उस सेब को पहुंचाना महांग पड़ता है। जबकि उन राज्यों में विदेशी सेब सस्ता पड़ता है। ऐसी स्थिति तमाम अन्य उत्पादों के साथ है। मोदी सरकार में रेलवे की योजना माल डुलाई में अपनी हिस्सेदारी 28 प्रतिशत के मौजूदा स्तर से बढ़ाकर 44 प्रतिशत करने की है। नेशनल रेल पुनर्के अनुसार माल डुलाई में रेलवे की हिस्सेदारी 2026 तक 33 प्रतिशत, 2031 तक 39 प्रतिशत, 2041 तक 43 प्रतिशत और 2051 तक 44 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए रेलवे विभाग लीक से हटकर प्रयास कर रहा है। अब तक मालगाड़ियों को बीच रास्ते में रोककर यात्री गाड़ियां पास कराई जाती थी, लेकिन अब मालगाड़ियां समय से चल रही हैं। पहले मालगाड़ियों की औसत रफतार 22 किमी प्रति घंटा थी, वर्ही अब 50 किमी प्रति घंटा की रफतार से मालगाड़ियां दौड़ रही हैं। सड़कों पर बढ़ती भीड़, महंगे डीजल और लेटलटीफी जैसे कारणों से दिग्जज कपनियां रेलवे से डुलाई को प्राथमिकता देने लगी हैं, जो रेलवे के लिए शुभ संकेत है। 2014 से 2020 तक मारुति सुजुकी ने 6,70,000 कारों की डुलाई रेलवे के माध्यम से की। इससे न केवल 10 करोड़ लैटर डीजल की बचत हुई, बल्कि वायुमंडल में 3000 टन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्पर्जन भी नहीं हुआ। इसी तरह टाटा मोटर्स, व्ह्युड्ड और हॉंडा जैसी कंपनियां भी अपनी गाड़ियों रेलवे के जरिये भेज रही हैं। 2014 में जहा 429 रेक्ट कारों की डुलाई में लगे थे, वर्ही 2020 में यह सच्चा बढ़कर 1,595 हो गई। डेकिंगटेड फ्रेट कारिंडोर (डीएफसी) बनने से मौजूदा रेलवे ट्रैकों पर दबाव कम होगा और व्यस्त मार्गों में माल डुलाई में तेजी आएगी। मेक इन इडिया पहल बैठक तहत अब शक्तिशाली लोको देश में ही बनने लगे हैं, जो 6000 टन की मालगाड़ी को 75 से 100 किमी प्रति घंटे की रफतार से खींच सकते हैं। पूर्वी डेकिंगटेड फ्रेट कारिंडोर के 351 किमी लंबे भाजपुर-खुर्जा के बीच शुरू होने से मालगाड़ियों की रफतार 25 किमी प्रति घंटे से बढ़कर 40 किमी प्रतिघंटा हो गई है। इससे अलीगढ़, खुर्जा, फिरोजाबाद और आगरा की कृषि उपज आसानी से देश के प्रमुख बाजारों तक पहुंच रही है। इतना ही नहीं यह सेवान 2022 से 2052 के बीच 42 लाख टन कार्बन उत्पर्जन घटाएगा।

ਵੈਲੋਟਾઇੰਸ ਡੇ ਕਿਧੋ ਮ ਸੇ ਜੁੜਾ ਇਤਿਹਾਸ

(ਆਧੁਨਿਕ ਸਮਾਜਾਰ ਸੇਵਾ)
ਪੰਡਿਤ ਸੁਧਾਂਚੁ ਤਿਗਰੀ

वैलेंटाइस डे का इतिहास।

मुख्य बातें

- 14 फरवरी यानी आज है प्यार और रोमास का दिन।
- पहला वैलेंटाइन डे वर्ष 496 ईस्वी में मनाया गया था।
- ऑरिया ऑफ जैकोबस की किताब में वैलेंटाइन डे किया गया है जिक्र,
- संत वैलेंटाइन की याद में

है। इस दिन को शुरूआत रोम के तीसरी शताब्दी से हुई। ऐसे में इस लेख के माध्यम से हम आपको वैलेंटाइन डे का इतिहास बताएंगे जिसे शायद ही आज आप जानते होंगे। आइए जानते हैं क्या है वैलेंटाइन डे का इतिहास और क्यों मनाया जाता है।

वैलेंटाइन डे का इतिहास -

इतिहासकारों के मुताबिक ऑरिया

मनाया जाता है ये दिन।
वैलेंटाइन डे 2022
फरवरी का महीना यूं तो साल का सबसे छोटा महीना होता है, लेकिन इस महीने में बनी यादें जिंदगीभर साथ रह जाती हैं। अपने साथ हल्की गुनगुनी धूप लेकर आने वाला यह महीना कई प्यार भरी कहानियां भी साथ लेकर आता है। वहीं आखिरकार सालभर प्रेमी जोड़े जिस दिन का बेसब्री से ढंतजार करते हैं वो घड़ी आ ही गई। जब दो प्यार करने वाले एक दूसरे के लिए जान देने की कसमें खाते हैं और जिंदगी भर साथ रहने का बादा करते हैं। वैलेंटाइन डे दो प्यार करने वालों के लिए बेहद खास होता है, इस दिन कपल एक दूसरे से अपने प्यार का इजहार करते हैं। बेजुबान प्रेम की भाषा को जुबां मिलती है, जो दो अधूरे सपनों को आप जैकोबस को किताब में वैलेंटाइन डे का जिक्र किया गया है, यह दिन रोम के पादरी संत वैलेंटाइन को समर्पित है। कहा जाता है कि 270 ईस्ती में एक संत वैलेंटाइन हुआ करते थे। वहीं उस समय वहां क्लूउडियस नामक अत्यंत आकर्षणकारी राजा का शासन था। वह प्रेम संबंधों के सरख खिलाफ था। उसका मानना था कि एक अकेला सिपाही शादीशुदा सिपाही की तुलना में जंग के लिए ज्यादा उचित और प्रभावशाली होता है। क्योंकि शादीशुदा सिपाही को हमेशा अपनी पतनी या प्रेमिका की चिंता सताती रहती है। यही कारण था कि राजा प्रेम विवाह और प्रेम संबंध के हमेशा खिलाफ रहता था। उसने ऐलान किया कि उसके राज्य का कोई भी सिपाही शादी विवाह नहीं करेगा और किसी महिला के साथ

राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष इनके हौसलों से हर किसी को मिलेगी प्रेरणा

आज की महिलाएं बन रहीं सशक्त व आत्मनिर्भरः डॉ सुषमा श्रीवास्तव शिक्षा व साहस हर महिला के उत्थान का मुख्य आधार : ड ईशान्या राज हर महिला की सफलता के पीछे एक पुरुष का साथ : डॉनीलम सिंह

प्रयागराज - देश की पहली

के उपलक्ष्य में उन्हें इंटरनेशनल

साहस हर महिला के उत्थान का

बनाया। डॉ नीलम की कर्तव्य निष्ठा

निर्वहन करने के बाद सेवानिवृत्ति

डो़ज़ इन्होने खुद लगवाई। आज



एनोस्थैटिक डॉ. नीलम सिंह



नैदानिक मनोवैज्ञानिक डॉ. ईशान्या राज



डॉ. सुषमा श्रीवास्तव,

हिजाब पर विवाद को लेकर फिर से उठा इस्लामी जगत में सुधार का सवाल

क्या लगभग डेढ़ सहस्रा

मुस्लिम' घोषित कर रहे हैं। ऐसे मुस्लिम भारत में भी हैं। पिछले महीने ही इस्लाम छोड़ने वाले बुध नुस्लमानों ने 'केरल के पूर्व मुस्लिम' नामक एक संगठन बनाया है। देश में सार्वजनिक तौर पर ऐसा पहली बार हुआ। इस संगठन का उद्देश्य अपना मजहब त्यागने वाले मुस्लिमों को आर्थिक एवं भावनात्मक सहायता देना है। परिवर्तन एक सार्वभौमिक-सतत प्रक्रिया है, जिसमें किसी भी समाज में कालबाह्य हो चुकी परंपराओं-प्रथाओं को छोड़कर आगे बढ़ने का मानस होता है। किसी भी समाज में सुधार की संभावना इस बात पर निभर करती है कि संबंधित दर्शन-मजहब आत्मसंधार तंत्र के प्रति क्षितिना

सहनशील है इस्लाम का जन्म हजरत मुहम्मद साहब को 610 में दैवीय ज्ञान प्राप्त होने के बाद हुआ। 632 में उनके न रहने के बाद उनके अनुचरों द्वारा इस ज्ञान को पवित्र कुरान में हुआ इसलिए मुस्लिम समाज की कई परपराएं वहाँ के भूगोल और उसकी तत्कालीन संस्कृति से प्रभावित हैं।

फिल्मों पर लगाई गई थी
पाबंदी, जब हुई थी कविता
पर राजनीति

गीतकार मजरूह सुल्तानपुरी को उनकी एक कविता के लिए जल भेज दिया गया था। तब देश में कंग्रेस का शासन था और नेहरू जी प्रधानमंत्री थे। संविधान और अधिकारियों की स्वतंत्रता को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजसभा में राष्ट्रपति के अधिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के दौरान ये बातें कहीं। कुछ बुद्धिजीवियों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर तथ्यों को तोड़ मरोड़कर पेश कर करने का आरोप लगाया। नरेन्द्र मोदी को बेहतरीन गल्पकार तक बता दिया गया। विद्वान माने जाने वाले कुछ स्तंभकारों ने प्रधानमंत्री को लेकर अन्यर्थी दियायांगी दीं। विद्रोह चल रहा था। अलग-अलग क्षेत्र में काम करने वाले कम्प्युनिस्ट उस विद्रोह में शामिल हो रहे थे। हिंदी फिल्म जगत भी उससे अछूता नहीं रहा था। सिनेमा से जुड़े कुछ लेखक, गीतकार, निर्देशक और अभिनेता भी उस आंदोलन में हिस्सा ले रहे थे। मजरूह उनमें से एक थे। मजरूह जिस कवि गोष्ठी या मुशायरे में जाते थे तो एक कविता अवश्य पढ़ते थे। उस कविता की कुछ पंक्तियां थीं- ये भी हैं हिंटलर का चेला/मार लो साथी जाने न पाए/ कामनवेल्थ का दास है नेहरू/मार लो साथी जाने न पाए। इस कविता में नेहरू का नाम लेकर मजरूह ने दम्भला किया था और उनके प्रह्लादे



